

८३

प्रधन नं० २८

ता. २२.७.८५.

वीरशास्त्र हिन्दीय प्रकाश गा. १६११४

- प्र० १. नीरीना प्रम्योना सुस्पष्ट रूपाव लजी. गजीते. ८ २० मार्क्स
 १) क्षायुवत - सुष्टुप्तवत - शिक्षापत्रवती स्पाई व्याज्ञा लजी. लैनाक्षणी
 स्वाधेक्षणा चलावी. जल तटवामा संख्याक्षणवती उपायत्वावै लैग्नावी. (८६२)
 २) क्षायित्वावी विश्रुत लजी. गजीय साम्याक्षणी व्याज्ञा - नीद - काळ लैग्नावी. (८६३)
 ३) विष्णु पाण वाँच है. चलावी लूटिवा वाग्नी घटनुं भव्यत्व लैग्नावी (८६४)
 परमात्मानुं हैवपत्रु इवारै थारै है. (८६५)
 ४) सामायिक्ति छाण्ड व्यत्पत्रि लजी (८६६) आधारां "आव्यहाराविद्या"
 ५) धर्मीषां पूर्वद शा मारै ? (८६७)
 ६) भूवामां शाख इवारै आवै है. (८६८) लैग्नावी लिंग - लिंगीनी नियम
 समझवी (८६९)
 ७) प्रलावक्षना जली लजी. (८६१) वैद्यायुत्यना संविक्षण एनावी. (८६०)
 ८) प्रलुब्धानक्षां ग्रीष्मीयवती संशय आय त्याहै शुं विष्णुर्वृ (८६१) लै
 लजी प्रत्याज्ञान गान्धीमां लैग्नावतीभूनी भव समझवी. (८६२)
 ९) अक्षमां यती हिंसानी अन्यदृश्यावी अवध कहै है. (८६३) लैग्नावी.
 तीक्ष्णा शास्त्रामां क्षेत्र निष्ठानी हिंसानुं विधान इवेल है. (८६४)
 १०) अवमास लत्य ७२मास पर्वति पितामोही शाति दीनावी आय है.
 लैग्नावी (८६५) वाक्यानां जोनी इहैवाय (८६६)
 ११) हिंसानुं लत्य अहिंसानुं फ़ि दशावी (८६७) सहिंसाना गुणानुवाद लजी. (८६८)

प्र० २. नीरीना पदोनी विश्रुत जी समास लजी आर्थलजी. गजीते. १०

- १) दुर्योदयाक्ष भ्रातृष्ठैद्य धनावतो (गा. ५१) १२११ मार्क्स
 २) द्वादशवार्षिकी (५२)
 ३) वीर्यमित तपस च्छ अच्छाक्षम (५३)
 ४) हिंसाशास्त्रीपैदेशकः (५४)
 ५) अशरीरी (५५)
 ६) अन्तर्वैत (५६)
 ७) वायु - तीक्ष्ण - लृणाशिनाम् (५७)
 ८) शर्वी वीर्द्धनी (५८)
 ९) निशाग्रस्त्रसज्जन्तुनाम् (५९)
 १०) दुर्गति प्रपत्त्वाणि धार्णीन (६०)
 ११) जितवागादि दीर्घीः (६१)

प्र० ३. नीरीना पदवापी आयातीनी अन्यद लजी अर्थ लजी. गजीते. ५ जा. मार्क्स

- १) अस्ति ५) | २) तारयैद्युः (६०) | ३) सुधीः (६०) |
 ४) दारिकाम् (६१) | ५) पात्यर्ति (६२) | ६) तारू (६३) |

૧૩. જીવી દર્શાવ્યા પ્રમાણે કૃતિમાંગ વાયાચી કમાચાં લખી [પાંચ ટે. ૨] કુમારેનું

૧) પિરનિં રી આરણી શુણું પલેંટાઇ (૨૮ એ ૨૩)

૨) વિસ્યસ્થાની " " ગર્તિઝ નિં (૩૨ એ ૩૬)

૩) હૃતિ " " પરડોખધી " (૪૭ એ ૫૭)

૧૪. શુણીની જાળી રાચા પૂર્વી.

૪૭ માર્કેનું

૧) તુંકું સાધારણ લક્ષાણ હી. લાચા સાધારણ લક્ષાણ હી.

૨) અચુકણા લક્ષાણી હી. (સંખ્યાનાં ૧, ૨ વાણીના ૧૫૩)

૩) અહિંસા વગર ગુણી લક્ષાણી. (સંખ્યાનાં ૧૩૮)

૪) વાચણા - કાંઈ - નીગલાળા ગુણી હૈન્દા હી. (૨૮૫)